वाराणसी प्रदक्षिणा
दर्शन-यात्रा

श्री काशी विश्वनाथ जी

धर्मसम्राट श्री स्वामी करपात्री जी महाराज

के कृपापात्र शिष्य

स्वामी शिवानन्द सरस्वती

रुद्राक्ष – महिमा

१. रुद्राक्ष भगवान शंकर का प्रिय आभूषण है।
२. रुद्राक्ष अकाल मृत्यु हारी है।
३. रुद्राक्ष दीर्घायु प्रदान करता है।
४. रुद्राक्ष सन्यासियों के लिए धर्म और मोक्ष प्रदान करता है।
५. रुद्राक्ष गृहस्थों के लिए अर्थ और काम का दाता है।
६. रुद्राक्ष से स्त्रियों का पुत्र लाभ होता है।
७. रुद्राक्ष शारीरिक व्याधियों को शमन करता है।
८. रुद्राक्ष मन को शान्ति प्रदान करता है।
९. रुद्राक्ष कुण्डलिनो जाग्रत करने में सहायता करता है।
१०. रुद्राक्ष सभी वर्णों के पापों का नाश करता है।
११. रुद्राक्ष भूतप्रेतादि बाधाओं से छुटकारा दिलाता है।
१२. रुद्राक्ष की पूजा से सभी दुःखों से मुक्ति मिलती हैं।
१३. रुद्राक्ष किसी भी कार्य की सिद्धि के लिए धारण करें चालीस दिन में प्रभाव दिखाता है।

हमारी काशी विश्वनाथ दर्शन-यात्रा मंडली के सदस्य

१. स्वामी शिवानन्द सरस्वती [अध्यक्ष] २. स्वामी गङ्गानन्द तीर्थ [सरक्षक] ३. वैद्यनाथ प्रसाद त्रिपाठी, [साहित्याचार्य मंत्री] ४. शिवशंकर चौबे, [कमिश्नर साहब, सचिव] ५. स्वामी विपिनचन्द्र सरस्वती [न्यायाधीश] ६. कलक्टर रामप्रसाद [जिलाधीश] ७. उमाशंकर प्रसाद [वकील]

यह सब हमारे काशी दर्शन यात्रा मण्डली के सदस्य हैं। हमारी काशी की दर्शन-यात्रा आज भी लगभग एक सौ यात्रियों के साथ होती है। पहले तीन सौ यात्री साथ में चलते थे।

हमारे अन्य प्रकाशन—

१. काशी मोक्ष निर्णय २. काशी पंचक्रोशी दर्शन-यात्रा ३. नवगौरी और नवदुर्गा प्रदक्षिणा दर्शन यात्रा, प्रमुख स्तोत्रों सहित ४. काशी दर्शन [सात खण्डों में]

वाराणसी प्रदक्षिणा दर्शन यात्रा

लेखक :

धर्मसम्राट् श्री स्वामी करपात्री महाराज

के कृपापात्र शिष्य

स्वामी शिवानन्द सरस्वती

धर्मसंघ, दुर्गाकुण्ड - वाराणसी

卐

भूमिका

ब्रह्मलीन, यतिचक्रचूड़ामणि, सनातन धर्मसम्राट् अनन्त श्री विभूषित स्वामी करपात्री जी महाराज के कृपापात्र शिष्य, कषायवस्त्रालंकृत, कर्पूर गौराङ्ग, शान्त आकृति, प्रकृतितः दयालु स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी महाराज ने कल्मषहारिणी, ज्ञानदायिनी सुरसरि के तट पर स्थित वाराणसी के आध्यात्मिक रहस्यों का वर्णन बड़े ही मार्मिक ढंग से किया है। गुरुजी ने काशी की महिमा, काशी मोक्ष निर्णय, काशी पंचक्रोशी दर्शन-यात्रा आदि अनेकों पुस्तकों की रचना करके धर्मार्थ-सतत् संघर्षशील काशीवासियों के लिये अमूल्य निधि अर्पित की है। प्रस्तुत पुस्तक 'वाराणसी प्रदक्षिणा दर्शन यात्रा' उन बहुमूल्य रत्नों में से एक है।

जहाँ गंगा के दर्शन मात्र से ही प्राणी मुक्तितत्त्व को प्राप्त करता है। जो—"गंगे तव दर्शनात्मुक्तिः न जाने किं स्नानजं फलम्" की सूक्ति को चरितार्थ करती हुई आवेष्टित हो, वह मुक्तिदायिनी काशी धन्य है। इस प्रकार मोक्ष-दायिनी गंगा की पावनता जिसके कण-कण में स्पष्ट रूप से परिलक्षित हो रही हो, वह काशी धन्य है। काशी भगवान शिव की नगरी है। महाप्रलय काल में जिस समय सम्पूर्ण पृथ्वी जल मग्न हो गयी थी उस समय भगवान् विष्णु की प्रार्थना से तीनों लोकों के कल्याणार्थ भगवान् शिव छत्राकार लिंग रूप धारण कर पंचक्रोशात्मक शिवलिंग क्षेत्र में स्थित हो गये। ब्रह्मवैवर्त पुराण में प्रमाण भी मिलता है कि—

लिंगरूपधरः शम्भू हृदयाद् बहिरागतः।
बृद्धिमासाद्य महति पंचक्रोशात्मकोऽभवत्॥

इतना ही नहीं शास्त्रीय प्रमाणानुसार—"ब्रह्मैव तन्निर्गुणं निर्विकारं निरन्तरं क्षेत्ररूपेण नित्यम्" निर्गुण निर्विकार परब्रह्म भी निरन्तर क्षेत्र के रूप में काशी में स्थित है, वह काशी धन्य है।

विश्वेश्वरो यत्र न तत्र चित्रं धर्मार्थकामामृतरूपरूपः।
स्वरूपः हि विश्वरूपस्तस्मान्न काशीसदृशी त्रिलोकी॥

जिस काशी में भगवान् विश्वनाथ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्रदान करने के लिये मूर्त्तिमान होकर विराजमान हैं, वह काशी निश्चित ही धन्य है। 'वाराणसी करुणामय दिव्यमूर्त्ति, इस संसार में वाराणसी साक्षात् करुणामयी अलौकिक मूर्त्ति है। वैसी भगवान् शिव की पुरी धन्य है।

कीटाः पिपीलिकाश्चैव ये चान्ये मृग पक्षिणः ।
कालेन निधनं प्राप्ता अविमुक्ते शृणु प्रिये ! ।।

जहाँ मनुष्य ही नहीं कूकर-सूकर, कीट पतंगादि निकृष्ट योनि के जीव भी काशी में प्राण-त्याग करने पर मुक्ति को प्राप्त कर लेते हैं, वैसी भगवान् शिव की पुरी धन्य है। ऐसी वाराणसी की प्रदक्षिणा इसकी परिक्रमा के विषय में क्या कहना है यह तो मनोवाच्छित फल प्रदान करेगी ही। वाराणसी के प्रदक्षिणार्थी सदैव सुखी रहते हैं। इतना ही नहीं—

प्रदक्षिणात्रयं कृत्वा पापं जन्म शतार्जितम् ।
विलयं प्रापयति स हि नात्र कार्या विचारणा ।।

वाराणसी की मात्र तीन प्रदक्षिणा से ही मनुष्य के सैकड़ों जन्म के पाप नष्ट हो जाते हैं। जीव निष्पाप हो मुक्ति को प्राप्त करता है। प्रमाण भी मिलता है कि—

कलौ विश्वेश्वरो देव कलौ वाराणसी पुरी

इस घोर कलिकाल में भगवान् विश्वनाथ और वाराणसी के पूजन-सेवन के अतिरिक्त अन्य कोई द्वितीय सुगम मार्ग नहीं है। यहाँ तक कि—

येषां क्वापि गतिर्नास्ति तेषां वाराणसी गतिः ।।

जिनकी अन्य क्षेत्रों में मुक्ति नहीं होती उनकी मुक्ति वाराणसी में होती है। जहाँ विश्वनाथ जी ने मुक्ति [मोक्ष] का क्षेत्र ही खोल दिया है, ऐसी परम पवित्र वाराणसी के महत्त्व को जीवों के मोक्षार्थ सुगम मार्ग को अपनी सरल भाषा में जन-मानस-पटल तक पहुँचाने का गुरुजी ने स्तुत्य प्रयास किया हैं। इस पुस्तक के प्रकाशन से यात्रा करने वालों को नई दिशा मिलेगी, सभी मनुष्यों को यह पुस्तक अनुप्राणित करेगी, ऐसी आशा ही नहीं मुझे पूर्ण विश्वास है।

— ॐ नमश्चण्डिकायै —

माँ के पद-पंकज में समर्पित—

रमेशकुमारमिश्र 'शास्त्री'
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय
वाराणसी

वाराणसी - माहात्म्य

विश्वेश्वरो यत्र न तत्र चित्रं,
धर्मार्थकामामृतरूपरूपः ।

[स्कन्दपुराण, काशीखंड अ. ३, श्लोक ९८]

अर्थ—विश्वनाथ भगवान् काशी में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को देने के लिए मूर्त्तिमान होकर स्वयं विराजमान हैं ।

काश्यां यो वैमृतश्चैव तस्य जन्मपुनर्नहि ।

[शिवपुराण, अ० २३]

अर्थ—काशी में मरनेवाले प्राणी फिर संसार में जन्म नहीं लेते क्योंकि वे सायुज्य मोक्ष को प्राप्त करते हैं ।

येनैकजन्मनामुक्तिर्यस्मात् करतलेस्थिता ।

[पद्मपुराण]

अर्थ—श्री काशी जी में एक ही जन्म में मुक्ति प्राप्त होती है ।

त्रिशूलगां काशीमधिश्रृत्य त्यक्ताशवोऽपि मय्येव संविशन्ति ।

[भस्म जावालोपनिषद्, अ० २]

अर्थ—भगवान् शंकर के त्रिशूल पर स्थित काशीपुरी में रहकर प्राण त्यागने (मरने) पर जीव मुझको ही प्राप्त करता है ।

छत्राकारन्तु किं ज्योतिजलादूर्ध्वं प्रकाशते ।
निमग्नायां धरण्यान्तु न निमज्जति तत्कथम् ।।

[काशी रहस्य]

अर्थ—ऋषिगण जो अमर हैं वे प्रलय के समय में श्री सनातन महाविष्णु से कहते हैं कि हे भगवन् ! यह छत्र के आकार की ज्योति जल के ऊपर क्या प्रकाशित है जो प्रलय काल में भी पृथ्वी के डूबने पर नहीं डूबती ? भगवान् विष्णु ने कहा—यह काशी है । इसे बुध जन 'काशी' ऐसा कहते हैं ।

जपध्यानविहीनानां ज्ञानविज्ञानवर्जिनाम् ।

तपस्युत्साहहीनानां गतिर्वाराणसीनृणाम् ॥

(कूर्मपुराणान्तर्गत वाराणसी माहात्म्य)

जो मनुष्य न तो जप कर सकते हैं और न परमेश्वर का ध्यान ही करते है, ज्ञान और विज्ञान से रहित हैं, तप करने लिये जिनके हृदय में लेशमात्र भी उत्साह नहीं है ऐसे मनुष्यों की गति वाराणसी में ही हो सकती है दूसरे जगह मुक्ति मिलना असम्भव है।

जन्मान्तर सहस्त्रेषु यत्पापंपूर्वसञ्चितम्।

(कूर्मपुराणे वाराणसी माहात्म्ये)

हजारों जन्मों के सञ्चित पाप भी वाराणसी प्रदक्षिणा करने से नष्ट हो जाते हैं।

कलौ विश्वेश्वरो देवः कलौ वाराणसीपुरी

कलौ भागीरथी गङ्गा दानं कलियुगे महत्।

(स्कन्दपुराणे काशीखण्डे)

अर्थ— कलियुग में भगवान् विश्वनाथ ही देवता हैं, वाराणसी ही मुक्ति पुरी है। भागीरथी ही गङ्गा हैं और कलियुग में दान देना ही कल्याणकारी है। दान से ही पापक्षय होते हैं।

स्वस्वजात्यनुसारेण यो धर्मोयस्य कीर्तितः।

तत्तद्धर्मपररेव सेव्या वाराणसी पुरी ॥

(पद्मपुराण वाराणसी माहात्म्ये)

अर्थ—अपने अपने जाति के अनुसार जो धर्म शास्त्र में जिसके लिए कहे गये हैं उस धर्म में जो जाति तत्पर रहती है उन्हीं मनुष्यों का वाराणसी पुरी काशी में काशीवास सफल होता है और वह व्यक्ति अपना जीवन सफल करता है।

जन्मान्तर सहस्त्रेषु सञ्चितैः पुण्यकर्मभिः।

प्राप्ता वाराणसी रम्या प्रसादात् परमेश्वरात् ॥

(मत्स्यपुराणे वाराणसी माहात्म्य)

वाराणसी प्रदक्षिणा-दर्शन-यात्रा

(क्षेत्र संन्यासियों की पञ्चक्रोशी यात्रा है)

वाराणसी करुणामय दिव्य मूर्ति-

हृत्सृज्य यत्र तु तनुं तनुभृत्सुखेन ।

विश्वेशदङ्महसि यत्सहसा प्रविश्य-

रूपेण तां वितनुतां पदवीं दधाति ॥

(क० ३०)

अर्थ—इस संसार में वाराणसी साक्षात् करुणामयी अलौकिक मूर्ति है, क्योंकि यहाँ प्राणिमात्र सुख पूर्वक देह त्याग कर उसी समय विश्वेश्वर के ज्ञान रूप ज्योति में प्रवेश कर तद्रूप कैवल्य पद को धारण कर लेते हैं।

किं मया वर्ण्यते देवि ह्यभिमुक्त फलोदयः ।

पापिनां यत्र मुक्तिः स्यान्मृता नामैक जन्मना ।

अन्यत्र तु कृतं पापं वाराणस्यां विनश्यति ।

अर्थ—हे देवि ! मैं क्या वर्णन करूँ, जो मुक्ति देना ही तुम्हारे दर्शन का फल है, जहाँ मरे हुए पापियों की तुरन्त मुक्ति हो जाती, जैसे कि अन्य क्षेत्र का किया हुआ पाप वाराणसी में विनष्ट हो जाता है ।

येषां क्वापि गतिर्नास्ति तेषां वाराणसी गतिः ।

क्षेत्रसंन्यासिनां कृते प्रदक्षिणाक्रमवर्णनम् ॥

स्नात्वा देवं समभ्यर्च्य विश्वेशम्विश्वया सह ।

मोदादिपञ्चकण्ढुण्ढि दण्डपाणिञ्च भैरवम् ॥

पूर्ववत्तीरगान्पूज्य दुर्गां सम्पूज्य यत्नतः ।

बहिरावरणान्त्यक्त्वा गणेशानान्तु सप्तकम् ॥

मध्ये प्रदक्षिणङ्कुर्याद्सिवरणयोः कृती ।

सम्मुखीभूय विधिवत्पूजयेच्चाऽग्रतः स्थितान् ॥

देवा देव्यश्च फलदाः क्षेत्रपालाः प्रयत्नतः ।
एकरात्रं द्विरात्रम्वा वसेन्मध्ये त्रिरात्रकम् ॥
यत्र श्रद्धा सुमहती वसेत्तत्र न संशयः ।
प्रत्यहं दण्डपाणेस्तु पूजा कार्या प्रयत्नतः ॥
दण्डपाणे पूजनेन सिद्धा भवति नान्यथा ।
दण्डपाणेः ! यक्षपते ! क्षेत्र संन्यासिवल्लभः ॥
पञ्चक्रोशस्य यात्रेयं सिद्धा मे त्वत्प्रसादतः ।
आगत्य विश्वनाथस्य पूजा कार्या च पूर्ववत् ॥

—काशी रहस्यम्

देव्युवाच

प्रत्यहं दण्डपाणेस्तु पूजा प्रोक्ता मयामघ ।
किमेतद्वद देवेश ! यात्रामुद्दिश्य शङ्कर ! ॥

भगवानुवाच

काशीम्प्राप्य बहिर्नैव गच्छेत्सर्वात्मना क्वचित् ।
मन्मुखात्सम्यगाश्रुत्य क्षेत्रसन्न्यासकृत्तमः ॥
दण्डपाणिः समभवत्तदारभ्य वरानने ! ।
कालान्तरे तदा देवि ! ऋषिभिर्नारदादिभिः ॥
पृष्टोऽहं क्षेत्रजनितपापनाशनमद्भुतम् ।
तदा सुदुर्लभन्देवि ! प्रायश्चित्तम्मया महत् ॥
उपदिष्टम्महल्लिङ्गं प्रदक्षिणमशेषतः ।
तच्छ्रुत्वा पृष्टवान् दण्डपाणिः क्षेत्रपरायणः ॥
तदा मयोपदिष्टोऽसौ महापाशुपतः कृती ।
क्षेत्रयात्रा द्वितीया मे मयोक्ता दण्डपाणये ॥

ततो दण्डपतेः पूजा कर्तव्या पूर्त्तिकारिणी ।
पञ्चक्रोशात्मकस्यैव लिङ्गस्य परमात्मनः ॥
प्रदक्षिणत्रयं कृत्वा जीवन्मुक्तो भवेन्नरः ॥
क्षेत्रसन्न्यासिनामेवं क्रमः प्रोक्तो मयानघे ॥
प्रदक्षिणाया माहात्म्यं महापापहरं शुभम् ॥

(काशीरहस्य अ० ११)

पञ्चक्रोशस्य यात्रायां शक्तिर्येषां न विद्यते ।
तेषांम्पापं कथं नश्येत् क्षेत्रपापकृतां सताम् ॥

(काशी रहस्य)

काशी के पञ्चक्रोशी करने में जो लोग असमर्थ हैं, उनका पाप किस प्रकार नष्ट हो गया, यदि वह काशी क्षेत्र में पाप करे तो उनका पाप कैसे नष्ट होगा। अर्थात् असमर्थियों को चाहिए कि काशी में रहकर पाप न करें।

सम्यक् पृष्टन्त्वया देवि ! महाहङ्कार नाशनम् ।
प्रायश्चित्तं न्यासिनां हि क्षेत्राघौघविनाशनम् ॥

काशी रहस्य

हे देवि ! तुमने ठीक प्रश्न किया। यह प्रश्न तुम्हारा अहंकारों का नाश करने वाला है। क्षेत्र के पाप समुदायों को नष्ट करने वाला प्रायश्चित्त है।

अन्यक्षेत्रे कृतं पापं वाराणस्यां विनश्यति ॥

दूसरे स्थान के किए हुए पाप काशी में नष्ट हो जाते हैं।

अविमुक्तं महाक्षेत्रं सर्वदा जननी यथा ॥
पुत्रस्य जननी लोके सर्वदाहितकारिणी ।
हित कृत्सर्वजन्तूनां काशीहाऽमुत्रसिद्धिदा ॥

(काशी रहस्य अ० ११)

यह काशी क्षेत्र अविमुक्त क्षेत्र काशी है जैसे अपनी माता, क्योंकि लोक में माता प्रत्येक परिस्थिति में पुत्र का हित करने वाली है, उसी तरह काशी प्रत्येक जीवों के हित करने वाली है।

पदे-पदे समाक्रान्ता ये विपद्भिरहर्निशम्।
तेषां क्वापि गतिर्नास्तितेषां वाराणसी गतिः॥

(का० खं० अ० ३२)

जो लोग पद-पद पर विपत्ति से आक्रान्त होते हैं अथवा जो लोग पैदल काशी में चलते हैं उनकी सारी विपत्ति दूर हो जाती है। जिनकी अन्य क्षेत्रों में मुक्ति नहीं होती है उनकी मुक्ति देने वाली काशी है।

पञ्च-क्रोशी

यात्रा जाने के पांच दिन पहले भगवान् के भक्तों और भाई बन्धु एवं मित्रों को निमन्त्रित करना चाहिए और विद्वानों को एक दिन पहले नन्दी श्राद्ध करना चाहिए। यात्रा जाने के एक दिन पहले दण्डपाणि और ढुण्ढिराज जी की पूजा करें।

प्रातः स्नान, संध्या और हवन, किञ्चित् दान आदि नित्य कर्म से निवृत्त होकर अन्नपूर्णा आदि के दर्शन करने के पश्चात् दण्डपाणि जी को प्रणाम करें। इस सम्बन्ध में उपनिषद् में, स्कन्दपुराण में, ब्रह्मवैवर्त पुराण में, पद्म पुराण में, शिव पुराण में एवं लिंग पुराण में विस्तार से वर्णन है।

१. दण्डपाणिभ्यो नमः (म० नं० सी० के० ३६/११ में, मो० ढुण्ढिराज गली)

प्रार्थना मन्त्र इस प्रकार हैं—

दण्डपाणे वक्षेत्रपतेः क्षेत्रसंन्यासिवल्लभ।
पञ्चक्रोशस्य यात्रेयं सिद्धामेत्वाप्रसादतः॥

२. ढुण्ढिराजाय नमः (म० नं० सी० के० ३५/२७ में, मो० सावित्री फाटक)

प्रार्थना मन्त्र इस प्रकार हैं—

दुण्ढिराज ! गणेशान ! महाविघ्नौघनाशनं ।
पञ्चक्रोशस्य यात्रार्थन्देह्याज्ञां कृपया विभो ॥

३. कालराजेश्वराय नमः (विश्वनाथ जी में)

४. वाराणसीश्वराय नमः विश्वनाथ जी हैं (म० नं० सी० के० ३५/१९ में, विश्वनाथगली)

प्रार्थनामन्त्र इस प्रकार है—

काश्यां प्रजातवाक्काय मनोजनितमुक्तये ।
ज्ञाताज्ञात विमुक्त्यर्थं पातकेभ्योहिताय च ॥

भावार्थ

हे विश्वनाथ भगवान् ! मैं समस्त पापों के प्रायश्चित्त करने के लिए और पितरों को मुक्ति दिलाने के लिए तथा अपना कल्याण करने के लिए यात्रा करना चाहता हूँ।

५. पञ्च विनायकाय नमः (म० नं० सी० के० ३५/२१ में, मो० विश्वनाथ सभा)

ज्ञानवापी तीर्थाय नमः (संकल्प लेकर)

ब्राह्मण को सीधा (अन्न), पैसा, फल देकर यात्री मणिकर्णिका घाट जाते हैं।

६. मणिकर्णिका तीर्थाय नमः (स्नान करके)

पञ्चोपचार से पूजन की सामग्री साथ में लेकर (गङ्गा जल, रोली, चन्दन, धूप, दीप, नैवेद्य, लाचीदाना, अगरबत्ती, द्रव्य (पैसा) चढ़ाने के वस्त्र आदि सामान साथ में लेकर पञ्चाक्षर महामन्त्र को मन से जपते हुए और शिव-शिव महामन्त्र का जाप करते हुए, "हरहर महादेव सम्भो काशी विश्वनाथ गङ्गे" एक स्वर से कीर्तन करते हुए चलते हैं।

काशी खण्ड के ५७वें अध्याय में ५८ श्लोक से छप्पन विनायक के प्रथमावरण के आठ विनायकों को छोड़कर द्वितीयावरण के लम्बोदर आदि आठ

विनायकों को दाहिने करके इन सात विनायकों का दर्शन-पूजन करते हुए यात्री चलते हैं और प्रत्येक पड़ाव में दण्डपाणि जी की मिट्टी की मूर्ति बना कर पार्थिव (मूर्ति) की पूजा करते हैं।

मणिकर्णिका घाट से दक्षिण में यात्री दर्शन, पूजन, कीर्तन करते हुए शनैः शनैः चलते हैं।

तारकेश्वर का प्रमाण-काशी खण्ड, काशी रहस्य, शिव रहस्य तथा शिव पुराण तथा लिङ्ग पुराण में विस्तार से प्राप्त होता है।

७. तारकेश्वराय नमः (मो० मणिकर्णिका घाट)

तारकेश्वर अपने दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों को इस लोक में सुख का साधन तथा विद्वान्, सज्जन, साधु, सन्त, माहात्माओं का सङ्ग और भक्ति-ज्ञान देकर अन्त में मुक्ति देते हैं।

काशी देवी जी का प्रमाण—वेदों, उपनिषदों, पुराणों और स्मृतियों में विस्तार से मिलता है।

८. काशी देव्यै नमः (म० नं० डी १/६७ में, मो० ललिता घाट)

काशी देवी जी अपने दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों को जब तक वह जीता है तब तक उस साधक को बुद्धि-योग देकर ज्ञान की साधना कराती है।

प्रश्न—ज्ञान का साधन क्या है ?

उत्तर—वेदान्त का श्रवण, मनन, निधिध्यासन करना ही ज्ञान का साधन है।

प्रश्न—ज्ञान की स्थिति क्या है ?

उत्तर—ध्यान, धारणा, समाधि ही ज्ञान की स्थिति है और अन्त में कैवल्य मोक्ष मिलता है।

शूलटङ्केश्वर का प्रमाण—काशी खण्ड, काशी रहस्य और शिव रहस्य में विस्तार से वर्णित है।

९. शूलटङ्केश्वराय नमः (मो० दशाश्वमेध घाट)

शूलटङ्केश्वर अपने दर्शन-पूजन करने वाले और उनके स्नान कराया हुआ चरणामृत जल पीने वाले रोगी के पेट के रोग और शूल सम्बन्धी रोग अच्छे होते हैं। दुःख-कष्ट दरिद्रता तथा चिन्ता दूर होती है। द्रव्य, परिवार, भक्ति की वृद्धि होती है।

क्षेमेश्वर का प्रमाण—काशी खण्ड में, केदार माहात्म्य में, शिव पुराण में विस्तार से प्राप्त होता है।

१०. क्षेमेश्वराय नमः (गङ्गातीर में, क्षेमेश्वर घाट)

क्षेमेश्वर के दर्शन-पूजन जो भक्त करते हैं उनके सब अपराध को क्षमा करके वे भक्तों को सुख एवं शान्ति तथा भक्ति देते हैं, तथा भक्तों के योग-क्षेम की सब व्यवस्था स्वतः होती है।

केदारेश्वर का प्रमाण—स्कन्द पुराण में, ब्रह्मवैवर्त पुराण में, शिवपुराण में, लिङ्ग पुराण में और शिव केदार माहात्म्य में विस्तार से मिलता है।

११. केदारेश्वराय नमः (म० नं० बी० ६/१०२ में, मो० केदार घाट)

केदारेश्वर अपने दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों के दुःख, कष्ट रोग और संकट तथा ग्रहों की पीड़ा और गरीबी दूर करते हैं। इसके अतिरिक्त जन-सन्तति, बुद्धि-विद्या तथा आयु की वृद्धि होती है। अन्त में मुक्ति मिलती है।

अस्सी सङ्गमेश्वर का प्रमाण—काशी खण्ड में, काशी रहस्य में, पद्म-पुराण में और लिङ्ग पुराण में विस्तार से प्राप्त होता है।

अस्सी-गङ्गा-सङ्गम तीर्थाय नमः

(अस्सी घाट में मार्जन करके गङ्गाजल साथ में लेकर चलें)

१२. अस्सीसङ्गमेश्वराय नमः (म० नं० बी० १/१७४ में, मो० अस्सीघाट)

अस्सीसङ्गमेश्वर अपने दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों की गरीबी, दुःख कष्ट और रोग को दूर करते हैं और द्रव्य, व्यापार, परिवार एवं नौकरी में पदोन्नति, भक्ति तथा ज्ञान में वृद्धि करते हैं।

अस्सीसङ्गमेश्वर से जगन्नाथ मन्दिर जाने का मार्ग इस प्रकार है—अस्सी सङ्गमेश्वर के दक्षिण बगल में जगन्नाथपुरी धाम में जगन्नाथ जी का मन्दिर है, जिसमें मूर्ति उत्तराभिमुख है।

जगन्नाथ जी का तीर्थस्थली और जगन्नाथ माहात्म्य में, स्कन्द पुराण में, विष्णु पुराण में, ब्रह्मवैवर्त पुराण में एवं वाराह-मत्स्यपुराण में विस्तार से वर्णन है।

१३. जगन्नाथ विष्णवे नमः (मो० अस्सी)

जगन्नाथ जी अपने दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों को शिव-विष्णु की भक्ति तथा विद्वान्-सज्जन-साधु-माहात्माओं की सङ्गति और भक्ति का साधन देकर सुख देते हैं और धन, सन्तान, भक्ति और ज्ञान-विद्या में वृद्धि करते हैं।

जगन्नाथ जी काशी में क्षेत्र-संन्यास लेकर काशी वास करते हैं और सप्तपुरियों में वह क्षेत्र काशी की जगन्नाथपुरी है।

जगन्नाथपुरी से अस्सी नदी पार करके संकट मोचन होते हुए सुकुलपुरा जाने का प्रमाण नहीं मिलता।

चूँकि अस्सी और वरुणा के मध्य में यात्रा करनी चाहिए।

जगन्नाथ जी से संकट मोचन होकर जो यात्री यात्रा करते हैं उन यात्रियों की यात्रा खण्डित होती है।

अतः अस्सी नदी (नाला) पार नहीं करनी चाहिए।

जगन्नाथ जी से दुर्गा जी जाने का मार्ग इस प्रकार है—

जगन्नाथ जी से उसी मार्ग से सड़क में आते हैं। सड़क के सामने पश्चिम की गली से गोयनका गली, बनकटी हनुमान होते हुए दुर्गाकुण्ड जाते हैं। दुर्गाकुण्ड में स्नान करते हैं।

जो यात्री दुर्गा जी नहीं रुकते हैं, वे मार्जन करते हैं।

दुर्गा कुण्ड के पूर्व दक्षिण के कोने के गणेश जी के मन्दिर में दुर्गा विनायक उत्तराभिमुख हैं।

१४. दुर्गाकुण्ड तीर्थाय नमः

दुर्गा विनायक का प्रमाण—वेदों में, स्कन्द पुराण में, काशी रहस्य में और शिव रहस्य में विस्तार से है।

१५. दुर्गा विनायकाय नमः (म० नं० बी० २७/२ में, मो० दुर्गा जी) दुर्गा विनायक के दर्शन-पूजा जो भक्त करते हैं। उनके दैहिक, दैविक और भौतिक ताप शान्त होते हैं और दुःख, कष्ट, विघ्न दूर होते हैं और सब कार्य निर्विघ्न सफल होते हैं।

दुर्गा शक्ति तीर्थ दुर्गा जी के मन्दिर से सटा बाहर पश्चिम बगल में कुँआ के रूप में है।

दुर्गा जी का प्रमाण—स्कन्द पुराण में, ब्रह्मवैवर्त पुराण में, शिव पुराण में, लिङ्ग पुराण में और देवी भागवत में विस्तार से प्राप्त होता है।

१६. दुर्गा देव्यै नमः [म० नं० बी० २७।१ में, मो० दुर्गाकुण्ड]

दुर्गाजी अपने दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों के दुःख, कष्ट, दरिद्रता और रोग दूर करती हैं और धन, परिवार व्यापार तथा बुद्धि और भक्ति ज्ञान में वृद्धि करती हैं। अपुत्री को दुर्गाजी के दर्शन-पूजन और अराधना से पुत्र की प्राप्ति होती है। पुरवासियों की रक्षा होती है।

दुर्गाजी का वार्षिक शृङ्गार होता है। उस समय विविध आयोजन होते हैं। गणेश, विष्णु, शिव-शक्ति यज्ञ होते हैं तथा वेद, वेदान्त, गीता और रामायण आदि सम्मेलन होते हैं। दुर्गा जी की मंगलवार, शनिवार, अष्टमी के दिन लाखों यात्री दर्शन करते हैं। दर्शन-पूजन करने के पश्चात् प्रथम विश्राम दुर्गाजी में यात्रा करते हैं। मन्दिर के बाहर कुँआ के आस-पास सफाई कर गंगाजल छिड़ककर आसन लगा कर मध्याह्न संध्या करें। जिन यात्री के कुल में यज्ञोपवीत धारण करने की परम्परा नहीं है वह यात्री तीनों संध्या में पञ्चाक्षर महामन्त्र का जाप करे। साधु; महात्माओं और ब्राह्मणों को यथा शक्ति मधु-मिष्ठान्न-लड्डू, (खीर) पायस आदि दिव्य भोजन कराना चाहिए। भोजन की व्यस्था न हो तो ऋतुफल, लड्डू आदि मिष्ठान्न का जलपान कराकर अपने परिवार सहित भोजन करें। तीन बजे से कथा श्रवण करें।

६

प्रश्न कथा श्रवण किस पुस्तक से करें ?

उत्तर—वाराणमी माहात्म्य, वाराणसी की महिमा, वाराणसी प्रदक्षिणा करने का फल और वाराणसी प्रदक्षिणा। पहले यात्रा करने वाले यात्रियों को जो-जो फल मिला है उसका वर्णन और वाराणसी में निवास करने का फल का वर्णन करते हैं। अपने पास साधन हो तो विद्वानों को साथ में लेकर यात्रा करनी चाहिए।

कथा श्रवण कराने वाले और कथा सुनने-कराने वाले से अन्नपूर्णा और विश्वनाथ जी प्रसन्न होते हैं। कथा श्रवण करने के प्रश्चात् स्नान सायं संध्या करके दुर्गा जी का दर्शन करें। दर्शन कर अपने अपने आसन में बैठ कर (गीत) कीर्तन, दुर्गाजी का ध्यान करके और वाराणसीश्वर विश्वनाथ जी का स्मरण करते हुए शयन करें।

दूसरे दिन प्रातः स्नान सन्ध्या आदि नित्य कर्म से निवृत होकर दुर्गा जी का दर्शन करके प्रार्थना करें। प्रार्थना का मन्त्र इस प्रकार है—

जय दुर्गे महादेवि जय काशी निवासिनी।
क्षेत्र विघ्न हरे देवि पुनर्दर्शन नमोस्तु ते ॥

प्रार्थना करके दर्शन, पूजन, कीर्तन करते हुए यात्री चलते हैं। दुर्गाजी के चौराहा से पश्चिम की सड़क से कबीर नगर कालोनी के अन्त में सड़क के किनारे नाला बहता है। उसी नाला के ऊपर सड़क से खोजवां, बजरडीहा, कुडिया मोहल्ला होते हुए आगे बजरडीहा से सुन्दरपुर जाने वाली सड़क मिलती है। त्रिमुहानी से दाहिने उत्तर की ओर बजरडीहा चौकी से पश्चिम मडुवाडीह जाने वाली पोखरी, बड़ी पटिया, ककरमत्ता, लखराऊ मोहल्ला होते हुए मडुवाडीह रेलवे स्टेशन के दक्षिण गेट से लाइन पार करके उत्तर जाने वाली सड़क से (पहले कारखाना से रास्ता था वह रास्ता बन्द हो गया) आगे त्रिमुहानी से दो रास्ता है।

एक तो डीह मोहल्ला को गली से मडुवाडीह थाना जाते हैं। दूसरा त्रिराहा से पश्चिम जाने वाली सड़क से आगे कारखाने के फाटक से उत्तर मडुवाडीह थाना और शालटङ्क विनायक जाने वाली सड़क से

दाहिने तरफ गणेश मन्दिर में, गणेशजी की मूर्ति उत्तराभिमुख है जो शालटङ्क विनायक हैं। शालटङ्क विनायक तीर्थ मन्दिर के उत्तर बगल में विशाल कुण्ड (तालाब) है। शालटङ्क गणेश-शक्ति तीर्थ पूर्व बगल में कुंआ के रूप में है। इसका ठंढा-मीठा जल है।

शालटङ्क विनायक जी का स्कन्दपुराण में, ब्रह्म वैवर्त पुराण में, शिव रहस्य में और काशी दर्शन में विस्तार से वर्णन है।

१७. शालटङ्क विनायकाय नमः [मो० मडुवाडीह थाना के दक्षिण बगल में]।

शालटङ्क विनायक अपने दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों के दुःख, कष्ट और संकट तथा गरीबी एवं चिन्ता दूर करते हैं। इनकी पूजा आराधना से परिवार, व्यापार, द्रव्य तथा नौकरी में पदोन्नति होती है तथा सुमंगल की वृद्धि होती है। जो व्यक्ति मन्दिर का जीर्णोद्धार करके इनका दर्शन करता है उसके सब कार्य निर्विघ्न सफल होते हैं। मुकदमा, राजनीतिक कार्य अर्थात् प्रधान, सभापति, मन्त्री आदि जैसे पदों की प्राप्ति और नेतागिरी में सफलता प्राप्त होती है।

दर्शन-पूजन के पश्चात् मन्दिर के बाहर पश्चिम मुंह करके भीमचण्डी देव्यै नमः कहते हुए अक्षत छोड़ें।

यह द्वितीय पड़ाव है। यहाँ यात्री मन्दिर के पास में विश्राम करते हैं। इस यात्रा का आधा मार्ग पूर्ण होता है। एक रात्रि के दर्शन यात्रा में यहाँ यात्री विश्राम करते हैं।

मध्याह्न संध्या करने के पश्चात् साधु-महात्मा और संन्यासियों को जलपान या भोजन कराकरके अपने परिवार के साथ भोजन करें। तीन बजे से कथा श्रवण करें। सत्सङ्ग के पश्चात् यात्री सायं सन्ध्या करके मन्दिर में दर्शन करने जाते हैं। दर्शन के पश्चात् अपने-अपने आसन में बैठकर कीर्तन और वाराणसीश्वर विश्वनाथ जी का ध्यान करते हुये रात्रि में शयन करते हैं। प्रातः स्नान संध्या आदि से निवृत्त होकर शालटङ्क विनायक के दर्शन और प्रार्थना करके दर्शन-पूजन-कीर्तन करते हुए शनैः-शनैः चलते हैं। मडुवाडीह से आदि केशव तक का मार्ग लगभग सात किलोमीटर है।

शालटङ्कविनायक से उत्तर मडुवाडीह चौराहा लहरतारा होते हुए लहरतारा में सड़क से सटा हुआ पश्चिम बगल के शंकरजी के मन्दिर में विश्वामित्रेश्वर हैं। मन्दिर के पश्चिम बगल में विशालकुण्ड (पोखरा) है यही विश्वामित्रेश्वर तीर्थ है।

विश्वामित्रेश्वर का काशी खण्ड, शिवपुराण, शिवरहस्य में विस्तार से वर्णन है।

१८. विश्वामित्रेश्वराय नमः [मो०–लहरतारा]

विश्वामित्रेश्वर अपने दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों के रोग-दुःख, कष्ट और दरिद्रता को दूर करते हैं। द्रव्य-व्यापार, परिवार और विद्या, भक्ति, ज्ञान आदि में वृद्धि होती है। यहाँ पहले यज्ञ, गीता, भागवत, वेद-वेदान्त-पुराण आदि सम्मेलन होते थे। दर्शन-पूजन करने के पश्चात् पश्चिम मुँह करके सोमनाथाय नमः उच्चारण करते हुए अक्षत छोड़ें।

विश्वामित्रेश्वर से उत्तर सड़क से वाराणसी स्टेशन के पश्चिम रेलवे गेट से लाइन पार करके उत्तर कैन्टूमेण्ट जाने वाली सड़क से जौनपुर जाने वाली रेलवे लाइन के उत्तर बगल में सड़क के पश्चिम पटरी में पाशपाणि तीर्थ कुआँ के बगल में तीन मन्दिर के दर्शन होते हैं। सब से उत्तर बगल शंकर जी के मन्दिर के पश्चिम दक्षिण के कोने में कूष्माण्ड विनायक पूर्वाभिमुख हैं।

कूष्माण्ड विनायक का प्रमाण काशीखण्ड, काशी-दर्शन और शिवरहस्य में प्राप्त होता है।

२०. कूष्माण्ड विनायकाय नमः (मो० कैण्टूमेन्ट एरिया में सदर बाजार)

कूष्माण्ड विनायक अपने दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों के विघ्न संकट को दूर करते हैं। पुरवासियों का कल्याण करते हैं। जो मन्दिरों का जीर्णोद्धार करते हैं वे व्यक्ति सब जगह विजयी होते हैं।

स्कन्द पुराण में पञ्चक्रोशी यात्रा करते समय पाशपाणि विनायक में रात्रि में विश्राम करना चाहिए, ऐसा वर्णन पूर्व में आया है वह वर्णन वाराणसी

प्रदक्षिणा यात्रा के लिए लिखा गया है। पहले लोग पाशपाणि में रात्रि में विश्राम करते थे, जब से मिलिट्री छावनी बनी तभी से यात्री चौकाघाट में विश्राम करने लगे हैं। यहाँ पहले विद्वानों का चतुर्दशी के दिन शास्त्रार्थ होता था।

कूष्माण्ड विनायक से पश्चिम-उत्तर के कोने में जो मन्दिर का दर्शन होता है वह चण्डी देवी का मन्दिर है उसमें मुण्ड विनायक पश्चिमाभिमुख हैं। मुण्ड विनायक, चण्डी देवी और चण्डेश्वर तीर्थ चण्डेश्वर के मन्दिर के बगल में कुआँ के रूप हैं। मुण्ड विनायक का प्रमाण काशी खण्ड में, शिव रहस्य में और काशी-दर्शन में विस्तार से प्राप्त होता है।

२१. मुण्ड विनायकाय नमः (मो॰ कैन्टूमेन्ट एरिया शक्ति मार्ग में)।

मुण्ड विनायक अपने दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों के दुःख, विघ्न, कष्ट दूर करते हैं। द्रव्य, व्यापार में वृद्धि, नौकरी में पदोन्नति और भक्ति में भी वृद्धि करते हैं।

चण्डी देवी का—स्कन्द पुराण, शिव पुराण, लिङ्ग पुराण, ब्रह्म पुराण तथा उपनन्दी पुराण में विस्तार से वर्णन है।

२२. चण्डी देव्यै नमः (शक्तिमार्ग कैन्टूमेन्ट एरिया में)।

चण्डी देवी अपने दर्शन पूजन करने वाले भक्तों के प्रचण्ड संकट को दूर करतीं और आपत्ति आदि से बचाती हैं। धन ऐश्वर्य प्राप्त कराकर भक्तों को सुख-सुविधा का अवसर दिलाती हैं। इनके दर्शन करने वाले व्यक्तियों को भूत, प्रेत, डाकिनी-शाकिनी शान्त होती हैं। जो भक्त मन्दिर का जीर्णोद्धार करके इनका दर्शन करते हैं उनको दुःख नहीं होता तथा उनके शत्रु परास्त होते हैं।

चण्डी देवी के पश्चिम बगल में चण्डेश्वर हैं। चण्डेश्वर का प्रमाण—शिव रहस्य, काशी खण्ड, काशी रहस्य, शिव पुराण, लिङ्ग पुराण तथा उपनन्दी पुराण में विस्तार से प्राप्त होता है।

२३. चण्डेश्वराय नमः (शक्ति मार्ग)

चण्डेश्वर के दर्शन-पूजन जो भक्त करते हैं उनको इस लोक में वैभव एवं सुख का साधन प्राप्त होकर सुख और भक्ति तथा ज्ञान की प्राप्ति होती है और अन्त में मुक्ति लाभ होती है।

चण्डेश्वर से उत्तर की सड़क से टेलीविजन स्तम्भ के बगल से पूर्व नदेश्वर मोहल्ला में सड़क के उत्तर बगल में काशीराज विभूति नारायण सिंह जी के (नदेसरी कोठी) महल के सामने शंकर जी के मन्दिर में नन्दीश्वर हैं।

नन्दीश्वर का प्रमाण—स्कन्द पुराण, शिव पुराण, लिङ्गपुराण, उपनन्दी पुराण, काशी रहस्य और शिव रहस्य में विस्तार से मिलता है।

२४. नन्दीश्वराय नमः (म० नं० एस० १८/२४० में, मो० नदेसर)

नन्दीश्वर के दर्शन-पूजन करनेवाले व्यक्ति को ऐश्वर्य और स्थिर लक्ष्मी, बुद्धि योग और जगत में मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

नन्दीश्वर से सटी हुई नन्दी देवी हैं। नन्दीश्वर देवी जी का प्रमाण—स्कन्द पुराण में, शिव पुराण में, नन्दी उप पुराण में, काशी रहस्य में, शिव रहस्य में विस्तार से प्राप्त होता है।

२५. नन्दीश्वरी देव्यै नमः (म० नं० एस० १८/२४० में, मो० नदेसर)

नन्दीश्वरी देवी जी अपने दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों के दुःख, संकट और रोग तथा भक्तों के दुर्गुण दूर करती हैं तथा ऐश्वर्य, आज्ञाकारी पुत्र दिलाकर भक्त को सुख दिलाती हैं साथ ही व्यापार, द्रव्य, भक्ति आदि की भी वृद्धि करती हैं।

वेदेश्वर का काशी खण्ड, काशी रहस्य, शिव रहस्य, लिङ्ग पुराण और उप पुराण आदि में विस्तार से वर्णन है।

२६. वेदेश्वराय नमः (म० नं० एस० १८/२४० में, मो० नदेसर)

वेदेश्वर के जो भक्त दर्शन-पूजन करते हैं उनको बुद्धियोग और ब्रह्मविद्या की प्राप्ति होती है। उन भक्तों के पुत्र और पौत्र विद्वान् होते हैं। उनको सब जगह मान, प्रतिष्ठा प्राप्त होती हैं।

नन्दीश्वर में पहले गणेश, विष्णु और रुद्र, शक्ति आदि बड़े-बड़े यज्ञ हुआ करते थे। वेद-वेदान्त, उपनिषद्, पुराण, गीता, भागवत् एवं रामायण आदि सम्मेलन होते थे।

वेदेश्वर से नदेश्वर सड़क में सड़क से पूर्व, चौराहा से उत्तर की ओर जाने वाली सड़क से पूर्व चौकाघाट पुल के नीचे से चौकाघाट सड़क से पूर्व बगल में धूपचण्डी त्रिमुहानी से उत्तर बगल के हनुमान मन्दिर में, हनुमान जी से सटा हुआ दक्षिण बगल में विकटद्विज विनायक पूर्वाभिमुख हैं।

विकटद्विज विनायक का प्रमाण—काशी खण्ड, काशी रहस्य, शिव रहस्य, काशी-दर्शन यात्रा में विस्तार से प्राप्त होता है।

२७. विकटद्विज विनायकाय नमः (मो० चौकाघाट)।

विकटद्विज विनायक अपने दर्शन-पूजन करनेवाले भक्तों के विघ्न, दुःख कष्ट और संकट दूर करते हैं। उन भक्तों को बुद्धि, विद्या, धन की प्राप्ति होती है तथा सब कार्य सफल होते हैं। भक्ति, ज्ञान, व्यापार, परिवार की वृद्धि होती है। किसी भी शुभकार्य करने जाने के एक दिन पहले जो व्यक्ति देशी घी में बना मिष्ठान्न खोवा, बेसन और सूजी के लड्डू, दूध आदि अर्पण करते हैं उनके सब कार्य सफल होते हैं। विकटद्विज विनायक के बाहर उत्तर मुख होकर पञ्च पाण्डवेश्राय नमः उच्चारण करते हुए अक्षत छोड़ें।

विकटद्विज विनायक से वरुणा के किनारे से आदि केशव जाने का प्रमाण नहीं मिलता। [सन् १९७२ से सन् १९७५ तक मैं भी अपनी भक्त मण्डलियों के साथ चौका घाट से वरुणा तट से यात्रा करता था। पैर फिसलने के कारण तीन बार वरुणा के जल में गिर पड़ा और कपड़े भींग गये। मैं शास्त्रों के प्रमाण को ढूंढ़ने के लिए कई पुस्तकालयों में गया, किन्तु चौका घाट से वरुणा किनारे जाने का कोई प्रमाण नहीं मिला।]

चौका घाट से पूर्व जी० टी० रोड सड़क से बकरिया कुण्ड के उत्तर बगल से वाराणसी सिटी रेलवे स्टेशन के पश्चिम रेलवे गेट से उत्तर बड़ी लाइन के नीचे से पूर्व राजघाट जाने वाली गली से राजघाट रेलवे गेट से रेलवे लाइन के पटरी से और बाद में सड़क से जाते हैं।

उत्तर कोनियाघाट जाने वाली सड़क से बड़ी लाइन के नीचे से दाहिनी तरफ़ राधा कृष्ण के मन्दिर में कुन्तेश्वर का दर्शन करके, रामानन्द आश्रम; तोतादरी मठ होते हुए, सड़क से बसन्त कालेज में, बैंक के पूर्व बगल में, सड़क के उत्तर पटरी में, गणेश जी के मन्दिर में, राजपुत्र विनायक पूर्वाभिमुख हैं।

राजपुत्र विनायक का प्रमाण स्कन्द पुराण में, उपनिषद् में, लिङ्ग पुराण में, काशी रहस्य में विस्तार से है।

राजपुत्र विनायकाय नमः।

(मं० नं० ए० ३७/४८ में, मो० बसन्त कालेज)

राजपुत्र विनायक अपने दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों के अनेक प्रकार के रोग, कष्ट, विघ्न तथा आपत्ति दूर करते हैं। इसके साथ ही भक्तों को कष्ट देने वाले शत्रु परास्त हो जाते हैं तथा द्रव्य, परिवार, मित्र, भक्ति आदि में वृद्धि होती है।

राजपुत्र विनायक के बाहर उत्तर मुख होकर वृषभध्वजेश्वराय नमः उच्चारण करते हुए अक्षत छोड़ें।

पहले यहाँ बड़े-बड़े यज्ञ होते थे और वेद वेदान्त, पुराण तथा गीता और रामायण आदि सम्मेलन होते थे।

(इस भूमि पर पहले राज महल था) राजपुत्र विनायक से पूर्व बगल में चौमुहानी पर जो विशाल मन्दिर का दर्शन होता है वही आदि केशव विष्णु जी का मन्दिर है। आदि केशव का प्रमाण स्कन्द पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण में, विष्णु पुराण में और शिव पुराण में विस्तार से प्राप्त होता है।

२९. आदि केशव विष्णवे नमः (मो० आदि केशव)।

आदि केशव विष्णु जी के दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों के दुःख, कष्ट, दरिद्रता, रोग एवं अज्ञान दूर होते हैं। इनके दर्शन से सुखपूर्वक काशीवास होता है और विद्या, परिवार, द्रव्य और भक्ति की वृद्धि होती है।

[आदि केशव से मंगला गौरी तक ओंकारेश्वर अन्तर्गृही दर्शन यात्रा में लिखा गया है]।

वरुणा-गङ्गा सङ्गमेश्वर, ज्ञान केशव और केशवादित्य सूर्य आदि का दर्शन करके आदि केशव से दक्षिण उसी मार्ग से चलें, यहाँ से जो यात्री चलने में असमर्थ होते हैं वह नाव में जाते हैं। उसी मार्ग से बसन्त कालेज होते हुए जी० टी० रोड से पहले चाय; पान आदि की दुकान के बीच से पगडण्डी रास्ता गङ्गा किनारे की ओर गयी है उसी मार्ग से सब यात्री गङ्गा किनारे से प्रह्लाद घाट जाते हैं।

प्रह्लाद घाट के ऊपर दाहिनी तरफ प्रह्लादेश्वर के मन्दिर के बगल के विष्णु मन्दिर में प्रह्लाद केशव पूर्वाभिमुख हैं।

प्रह्लाद केशव विष्णु जी का काशी खण्ड में, विष्णु पुराण में, बाराह पुराण में और काशी दर्शन में विस्तार से वर्णन है।

३० प्रह्लाद केशवाय नमः [म० नं० ए १०/८० में, मो० प्रह्लादघाट]

प्रह्लाद केशव के दर्शन-पूजन जो भक्त करते हैं उनके ऐश्वर्य पुत्र, मित्र और भक्ति तथा ज्ञान की प्राप्ति होती है। इसके साथ ही द्रव्य-विद्या और परिवार में भी वृद्धि होती है।

३१ प्रणव विनायकाय नमः।

त्रिलोचन घाट में हिरण्य गर्भेश्वर के बगल में प्रणव विनायक हैं। प्रणव विनायक के दर्शन करें।

बद्रीनारायण घाट के ऊपर विष्णु मन्दिर में बद्रीनारायण पूर्वाभिमुख हैं। बद्रीनारायण जी का स्कन्द पुराण, काशी खण्ड, शिव रहस्य एवं तीर्थ-स्थली और केदार माहात्म्य में विस्तार से वर्णन है।

३२ बद्रीनारायण विष्णवे नमः [म० नं० ए० १/७२ में।]

बद्रीनारायण जी अपने दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों के दुःख-दरिद्रता, संकट दूर करते हैं। इसके साथ ही शिव और विष्णु जी की भक्ति मिलती है।

परिवार और धन की वृद्धि होती है। जिन मनुष्यों को बद्रीनारायण जाने की वासना उत्पन्न होती है वह व्यक्ति बद्रीनारायण जी का दर्शन-पूजन

करके, कीर्तन करके प्रसाद पाते हैं। इससे उन यात्रियों के बद्रीनारायण जाने की वासना समाप्त होती है।

बद्रीनारायण जी से सटा हुआ उत्तर बगल के शंकर जी के मन्दिर में नरनारायणेश्वर हैं। नरनारायणेश्वर का प्रमाण—स्कन्दपुराण में, लिङ्ग पुराण में, मत्स्य पुराण और शिव रहस्य में विस्तार से प्राप्त होता है।

३३ नरनारायणेश्ववराय नमः।

[मं० नं० ए० १/७२ में, मो० बद्रीनारायण घाट]

नरनारायणेश्वर अपने-दर्शन पूजन करने वाले भक्तों को शिव और विष्णु की भक्ति सुलभ कराते हैं। भक्तों की बुद्धि में वृद्धि होती है और दुःख, कष्ट, विघ्न दूर होते हैं। धन-धान्य में वृद्धि, परिवार सुबुद्ध और सुखी होता है।

बद्रीनारायण से दक्षिण, रामघाट के शंकरजी के मन्दिर में वीररामेश्वर हैं। वीररामेश्वर का प्रमाण—स्कन्द पुराण में, काशी रहस्य में, शिव रहस्य में विस्तार से प्राप्त होता है।

३४ वीररामेश्वराय नमः [मं. नं. के० २४/१०, रामघाट में]

वीररामेश्वर के जो भक्त दर्शन-पूजन करते हैं उनके दुःख, दरिद्रता, कष्ट दूर होते हैं तथा वीर्यमान, बलवान, तेजस्वी और बुद्धिमान होते हैं, साथ ही शिव और राम जी की भक्ति प्राप्त होती है।

वीररामेश्वर का प्रमाण काशी खण्ड में, शिव रहस्य में, काशी दर्शन में और शिव पुराण में विस्तार से प्राप्त होता है।

वीर रामेश्वराय नमः (मो० संकटा घाट)

३५. मणिकर्णिका तीर्थाय नमः

यहाँ स्नान करके पश्चिम ब्रह्मनाल, नीलकण्ठ और ज्ञानवापी होते हुए ज्ञानवापी के उत्तर फाटक से ढुण्ढिराज गली में, दण्डपाणि के मन्दिर में दण्डपाणीश्वर जी हैं।

३६. दण्डपाणीश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३६/११ में)

३७. दण्डपाणी भैरवाय नमः (म० नं० सी० के० ३६/११ में, मो० ढुण्ढिराज गली)

३८. साक्षीविनायकाय नमः (म० नं० डी० १०/७ में)

ढुण्ढिराज जी और अन्नपूर्णा जी के दर्शन करके विश्वनाथ जी के पूर्व-उत्तर के कोने में, वाराणसी देवी के मन्दिर में, वाराणसी देवी जी पूर्वाभिमुख हैं।

वाराणसी देवी जी का प्रमाण—स्कन्द पुराण में, पद्म पुराण में, ब्रह्मवैवर्त पुराण में और अन्य पुराणों में भी मिलता है।

३९. वाराणसी देव्यै नमः (म० नं० सी० के ३५/१९)

वाराणसी देवी जी अपने दर्शन, पूजन और आराधना करने वाले भक्तों के दुःख, संकट, विघ्न, रोग, ग्रह-ग्रसित पीड़ा आदि को दूर करती हैं।

इस लोक में धन, पुत्र आदि सुख के साधन देकर सुखी बनाती हैं और अन्त में मोक्ष की भिक्षा देती हैं।

४०. कालराजेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३५/१९)

४१. वाराणसीश्वराय नमः (म० नं० सी० के ३५/१९ में, विश्वनाथ जी हैं)

प्रार्थना मन्त्र इस प्रकार है—

पञ्चक्रोशस्य यात्रेयं यथा शक्त्यामया कृता।
नूनंसम्पूर्णतां यातु त्वत्प्रसादाद् उमापते ॥

ज्ञानवापी से संकल्प छोड़कर, यथा-शक्ति दक्षिणा (अन्न वस्त्र) देकर संकल्प बोलने वाले ब्राह्मणों के अभाव में स्वयं संकल्प लेकर यात्रा करें।

इस प्रकार क्षेत्र संन्यासियों की पञ्चक्रोशी दर्शन-यात्रा पूर्ण हुयी।

वाराणसी प्रदक्षिणा दर्शन-यात्रा का फल

इस यात्रा से पापों का प्रायश्चित्त होता है। पुनः पाप में वृद्धि नहीं हो पाती और पाप कर्म को छोड़कर निष्काम सेवा और सत्कर्म में प्रवृत्ति बढ़ती है। रोग नष्ट होते हैं, यात्रा से कठिन से कठिन कार्य भी सिद्ध होते हैं, शत्रु मित्र बनते हैं। यात्रियों के पितर और इष्ट देव प्रसन्न होते हैं तथा

ग्रह शांत होते हैं। यात्रियों के सभी मनोरथ पूर्ण होते हैं और विद्या, भक्ति-ज्ञान की प्राप्ति होती है।

× × ×

यात्री वाराणसी के ईश्वर वाराणसीश्वर विश्वनाथ भगवान् का स्मरण करते हुए अपने-अपने घर जाते हैं।

त्वदीयं वस्तु विश्वेश ! तुभ्यमेव समर्पितम् ।
हरि ॐ तत्सत्शिवार्पणमस्तु । हर-हर महादेव ॥

पितरों के कल्याण के लिए, माता, पिता, प्रपितामह, आदि पितरों के मुक्ति दिलाने के उद्देश्य से यात्री स्वयं यात्रा करते हैं और जो यात्री स्वयं यात्रा नहीं करते हैं वे ब्राह्मणों को वरण करके यात्रा करने के लिये भेजते हैं। इसके साथ ही मनोरथ पूर्ण करने के लिए, कठिन-से-कठिन कार्य सिद्ध करने के लिए यात्री भगवान् से मनौती मान करके काशी की सम्पूर्ण यात्रा करते हैं अतः उनके सभी कार्य सफल होते हैं।

गुरु-शिष्य संवाद

शिष्य— गुरुजी ! काशीमें कितने अन्न-क्षेत्र व कितने कथा-प्रवचन के स्थल हैं?

गुरुजी— प्रिय वत्स ! काशी में कुल छोटे बड़े ३६० (तीन सौ साठ) अन्न क्षेत्र हैं । लगभग ५०० (पाँच सौ) कथा-प्रवचनादि के स्थल हैं ।

शिष्य—गुरुजी काशी में कितने जगहों पर कब से कब तक कीर्त्तन होते हैं और इससे क्या लाभ होता है ।

गुरुजी —प्रिय वत्स । लगभग पच्चीस सौ [२५००] स्थलोंपर कीर्त्तन होते हैं। मातायें दो बजे से ४ बजे तक कीर्तन करती हैं । प्रत्येक मन्दिर में प्रात. दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों की भीड़ लगी रहती है । जो काशी को दर्शन–यात्रा करते और कराते हैं उन दर्शनार्थियों या भक्तों के सम्पूर्ण मनोरथ पूर्ण होते हैं ।

शिष्य—गुरुजो शरीर निरोग कैसे रहता है ? रोगी निरोग हो जाय और निरोग व्यक्ति को रोग ग्रसित न हो मार्ग बताये ।

गुरुजी—यम नियम संयम, आसन, प्रत्याहारादि से शारीरिक तंत्रिकाये अपनी नियत गति से कायरत रहती हैं । शरीर में कोई रोग नहीं होता है । आयुर्वेदिक औषधि से शरीर के रोग समूल नष्ट हो जाते हैं । प्रातः तीन बजे के पश्चात् कम से कम दो किलोमीटर पैदल यात्रा करने से शरीर निरोग रहता है । इसीलिए प्रातः ब्राह्ममुहूर्त्त में जो लोग गंगा-स्नान करके देवी देवताओं के मन्दिरों में जाकर दर्शन करते हैं, वे स्वस्थ रहते हैं । काशी को पंचकोशी यात्रा करने से सभी रोगों का शमन होता है । वैज्ञानिक दृष्टि से भी यह सात दिनों की संयमादि से परिपूर्ण यात्रा आरोग्यदायक है ।

शिष्य—गुरुवर । किस समय में कार्य करने पर सफलता प्राप्त होती है । कुछ लोग दोपहर को कुछ प्रातःकाल, कोई सायंकाल, कोई सभी समय को ही सफलता का सूचक मानते हैं । इसमें आपके क्या विचार है ? आपकी दृष्टि में कलाकार साहित्यकार काव्यकार साधक और विद्यार्थी के लिए कौन सा समय सिद्धिदायक होता है।

गुरुजी—जो व्यक्ति ब्राह्ममुहुर्त्त में उठकर प्रातः (३ बजे के पश्चात्) अपना कार्य करता है, वह निश्चित ही सफल होता है । कलाकार कला में, साहित्यकार साहित्यिक अभिव्यञ्जना मे कवि काव्य कला में, साधक साधना में और विद्यार्थी विद्या में निपुणता को प्राप्त होता है। प्रातःकाल तथा दिन मे किसी भी समय १ घंटा के इश्वरार्चन मात्र मनुष्य के दैनिक पाप क्षीण होते हैं और रोग विघ्नादि की निवृत्ति होती है । अच्छा रमेश अब पुनः दुसरे दिन अन्य प्रश्नों के उत्तर दूँगा ।

अनन्त श्री विभूषित स्वामी करपात्रीजी महाराज
के ग्रन्थ

संस्कृत हिन्दी ग्रन्थ —वेदार्थपारिजात, रामायणमीमांसा, मार्क्सवाद और रामराज्य, विचारपीयूष, भक्तिसुधा, संकीर्त्तनमीमांसा और वर्णाश्रम धर्म, वेद का स्वरूप और प्रामाण्य, अहमार्थ और परमार्थ, क्या सम्भोग से समाधि, राहुल जी की भ्रान्ति, तिथ्यादिनिर्णयः कुम्भनिर्णयश्च, वेदान्त प्रश्नोत्तरी, श्रीअभिनवशंकर स्वामी श्री करपात्री, भागवत सुधा, मार्क्सवाद और ईश्वर, राधा-सुधा, भ्रमरगीत, रास और प्रयोजन, जाति, राष्ट्र और संस्कृति, प्रवचन पीयूष, बदलती दुनियाँ, जीवन-दर्पण, शंकर-समाधान विदेश-यात्रा, श्री करपात्री जी संस्मरण।

संस्कृत ग्रन्थ—विद्यारत्नाकर, चातुर्वर्ण्य संस्कृतिविमर्शः, श्रीविद्यावरिवस्य, भक्तिरसार्णव, वेदस्वरूपविमर्शः, वेदप्रामाण्यमीमांसा।

मिलने का पता—

श्री सदानन्द सरस्वती (वेदांतीजी)

श्री करपात्री धाम, केदार घाट- वाराणसी

आवश्यक सूचना

महोदय,

अनन्त श्री विभूषित सनातन धर्म-सम्राट्, पूज्यपाद स्वामी श्री करपात्री जी महाराज के जीवन की राजनैतिक, सामाजिक, आध्यात्मिक तथा साधनात्मक दिव्यादिदिव्य घटनाओं के संकलन का दिव्य-संकल्प मेरे मन में उठा है। उनके महायज्ञों का चमत्कार, भारत दिग्विजय शास्त्रार्थ. भारत दिग्विजय पैदल यात्रा, सिद्धि और चमत्कार के सन्दर्भ में जो व्यक्ति अनुभव रखते हों, उसे लिखकर भेजने की कृपा करें। वह आपके ही नाम से प्रकाशित होगा।

निवेदक :—

स्वामी शिवानन्द सरस्वती

धर्मसंघ शिक्षा मण्डल

दुर्गाकुण्ड, वाराणसी